CORDOVA App 24X7 For Teachers Only

FREE SMART CLASS SOFTWARE WITH WEB SUPPORT For Teachers Only

वसुधा

संस्कृत

व्याकरण

6

CORDOVA®

Scanned with CamScanner

1 भाषा व्याकरणं च

देखिए, पढ़िए और समझिए–

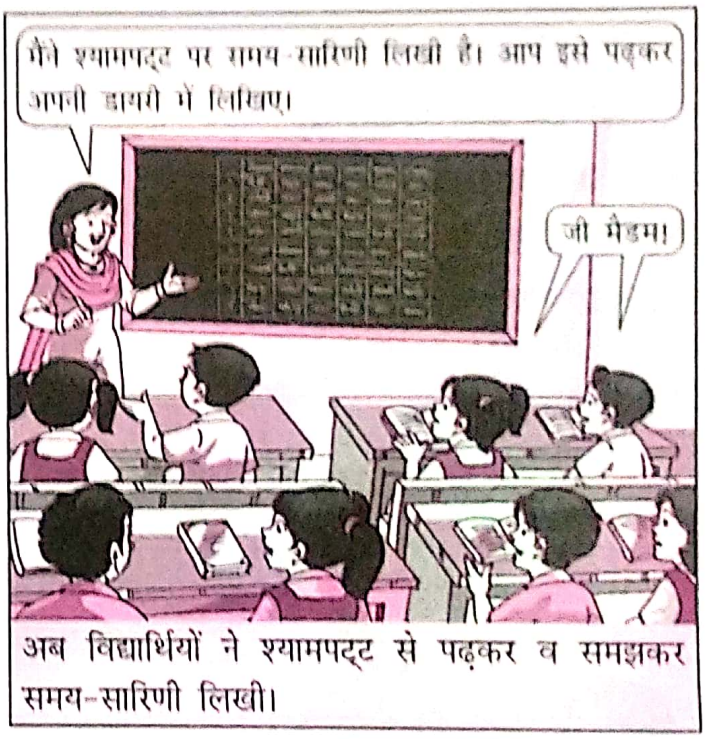

अब विद्यार्थियों ने श्यामपट्ट से पढ़कर व समझकर समय-सारिणी लिखी।

आपने ध्यान दिया होगा कि अध्यापिका ने बोलकर व लिखकर तथा बच्चों ने सुनकर व पढ़कर विचारों का आदान-प्रदान किया। इसी प्रक्रिया को हम **भाषा** कहते हैं।

अपने मन के भावों या विचारों को एक-दूसरे तक पहुँचाना या आदान-प्रदान करना ही **भाषा** कहलाती है।

भाषा के रूप

भाषा के दो रूप होते हैं–

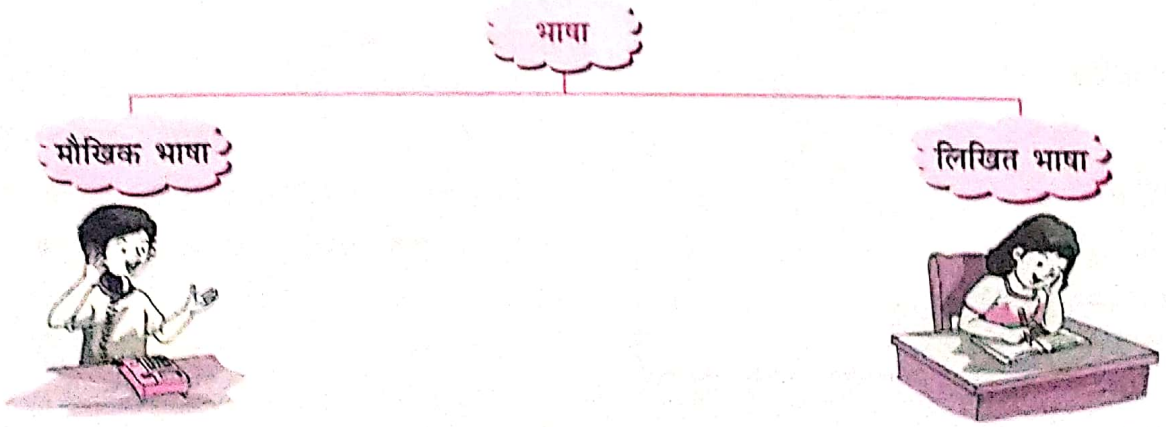

Scanned with CamScanner

मौखिक भाषा

भाषा के मौखिक रूप में हम बोलकर अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों के विचारों को सुनते हैं। जैसे इस चित्र में दो लड़के फ़ोन पर बोलकर तथा सुनकर अपने विचारों का आदान-प्रदान कर रहे हैं।

लिखित भाषा

जब हम अपने विचारों को लिखकर प्रकट करते हैं तथा दूसरा पढ़कर समझता है तो यह रूप **लिखित भाषा** कहलाता है। जैसा कि इस चित्र में एक बच्चा लिखकर अपने भावों को प्रकट कर रहा है तथा दूसरी बच्ची पढ़कर समझ रही है।

लिपि

लिपि की परिभाषा

किसी भी भाषा को **लिखकर** प्रकट करने के लिए हम जिन चिह्नों व तरीकों का प्रयोग करते हैं, वे **लिपि** कहलाते हैं; जैसे- क्, ख्, ग्, घ्।

Scanned with CamScanner

व्याकरण परिचय

साधना – अहं सत्यं वदति।

वैभव – यह वाक्य शुद्ध नहीं है। 'अहं सत्यं वदामि' यह वाक्य शुद्ध है।

साधना – तुम्हें कैसे पता कि यह वाक्य शुद्ध है या अशुद्ध?

वैभव – मैंने व्याकरण पढ़कर जाना।

साधना – व्याकरण क्या होता है?

वैभव – व्याकरण हमें भाषा का शुद्ध रूप सिखाता है।

साधना – इसका मतलब व्याकरण भाषा को शुद्ध तथा अनुशासित करता है। अब मैं भी व्याकरण पढ़कर अपनी भाषा को शुद्ध करूँगी।

सोचिए और बताइए–

1. भाषा किसे कहते हैं?
   - अपने विचारों के आदान-प्रदान करने को ☐
   - मुँह से आवाज़ निकालने को ☐
2. लिपि किसे कहते हैं?
   - लिखने के ढंग को ☐
   - पढ़ने के ढंग को ☐

व्याकरण की परिभाषा

व्याकरण वह शास्त्र है, जिसमें नियमों द्वारा हम भाषा का शुद्ध व मानक प्रयोग सीखते हैं।

अभ्यासः

लिखितः

1. चिन्तयत, अवगच्छत मेलनं च कुरुत। (सोचिए, समझिए और मिलान कीजिए।)

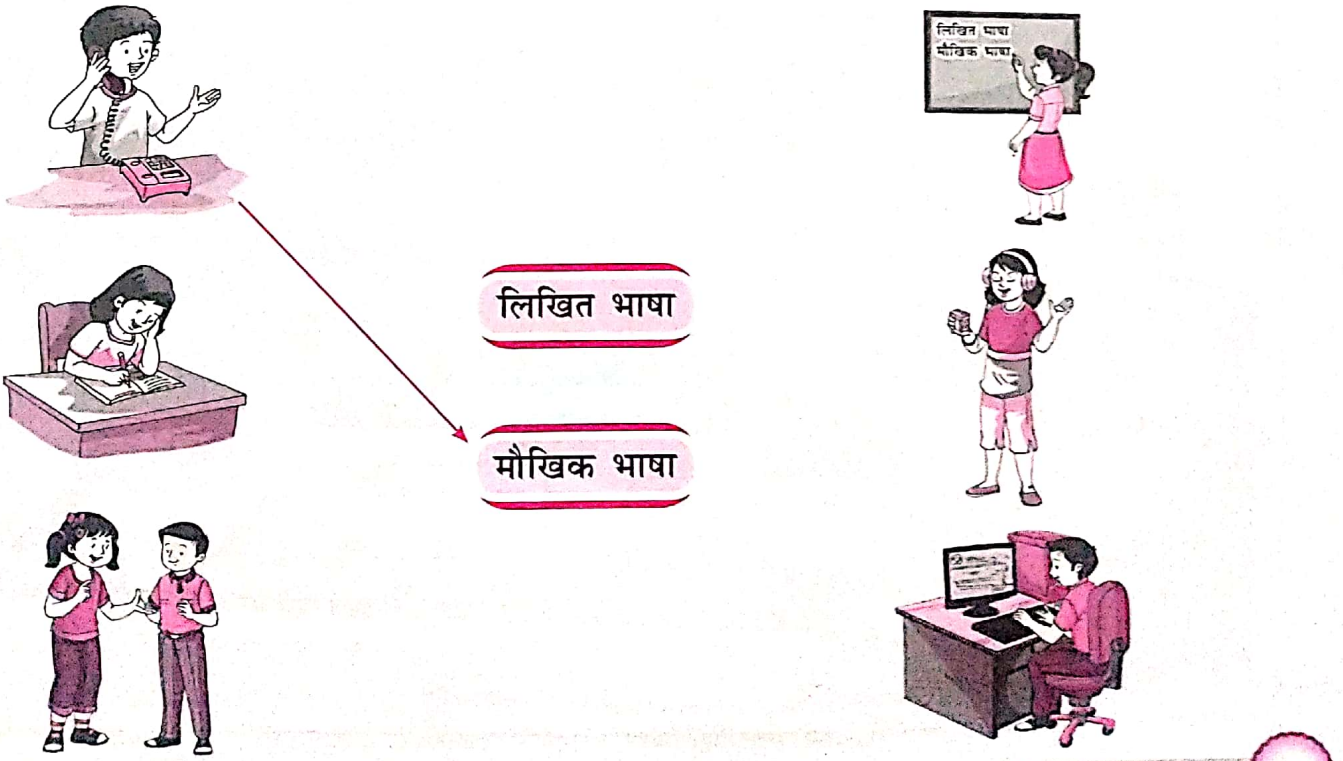

Scanned with CamScanner

2. प्रदत्त-प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत। (दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।)

(क) लिखित भाषा किसे कहते हैं?

.....

.....

(ख) व्याकरण की परिभाषा लिखिए।

.....

.....

(ग) भाषा का सही प्रयोग सीखने के लिए किसकी आवश्यकता होती है?

.....

.....

रचनात्मकं कार्यम्

- प्रदत्तचित्रं दृष्ट्वा लिखत यत् अस्मिन् चित्रे भाषायाः कस्य रूपस्य प्रयोगः अस्ति?
  (दिए गए चित्र को देखकर लिखिए कि इसमें भाषा के किस रूप का प्रयोग हो रहा है?)

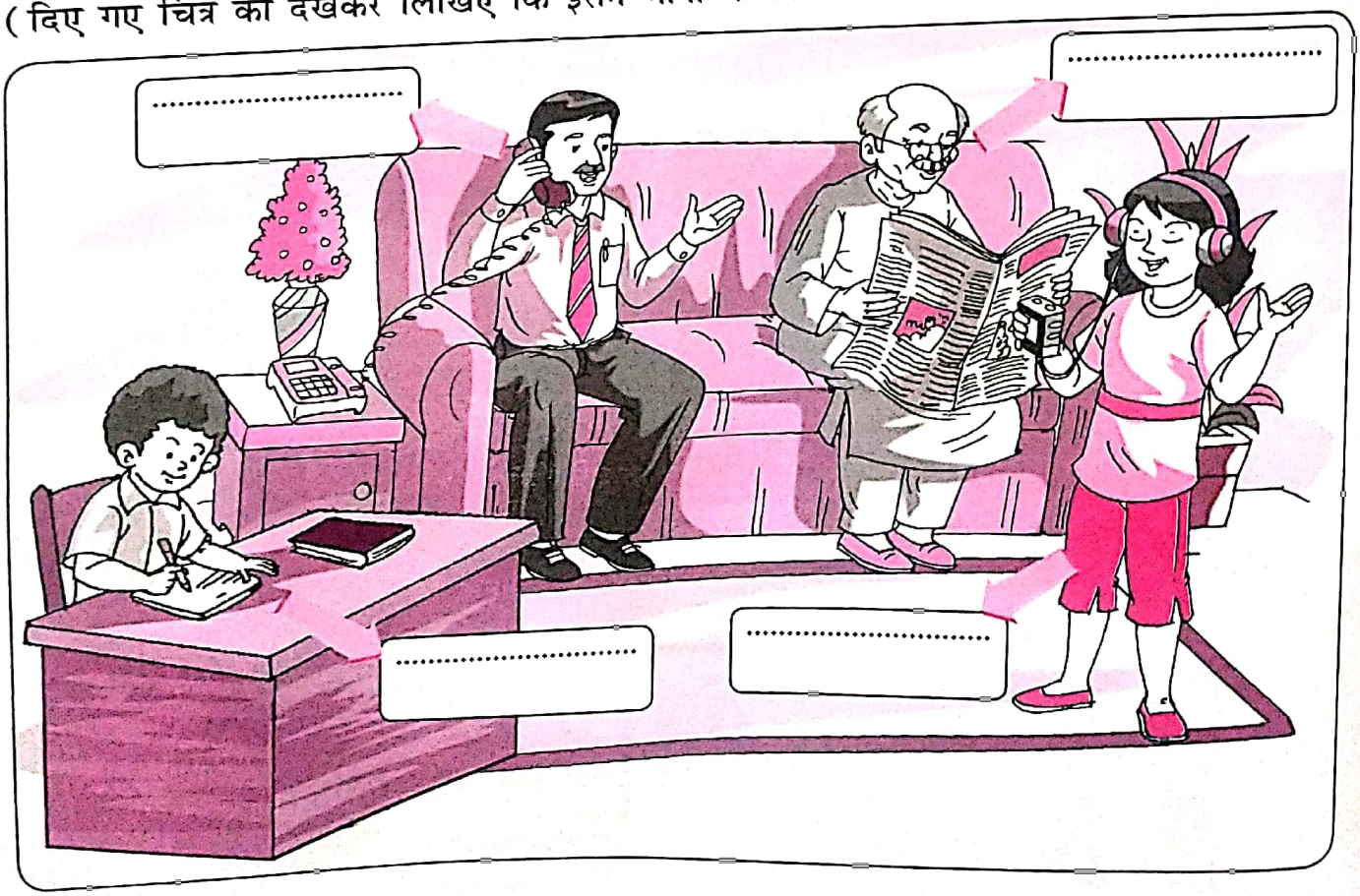

Scanned with CamScanner

2 संस्कृत-वर्णमाला

मुख से निकली किसी भी ध्वनि को प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, वे **वर्ण** या **अक्षर** कहलाते हैं; जैसे– क्, च्, प्।

वर्णमाला

वर्णों के समूह को ही **वर्णमाला** कहते हैं।

संस्कृत वर्णमाला के मुख्यतः तीन भेद होते हैं–

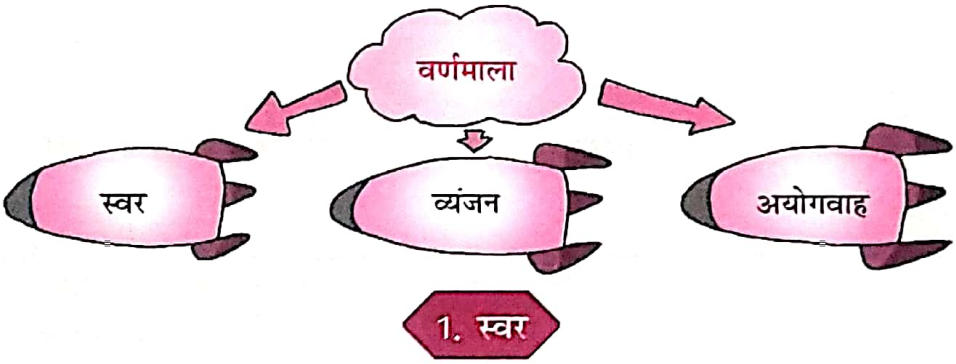

1. स्वर

स्वर वे वर्ण होते हैं जिन्हें बोलते समय किसी अन्य वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती अर्थात् वे अपने आप में सशक्त होते हैं। संस्कृत वर्णमाला में स्वरों की संख्या 13 होती है जो इस प्रकार हैं–

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ

स्वर तीन प्रकार के होते हैं–

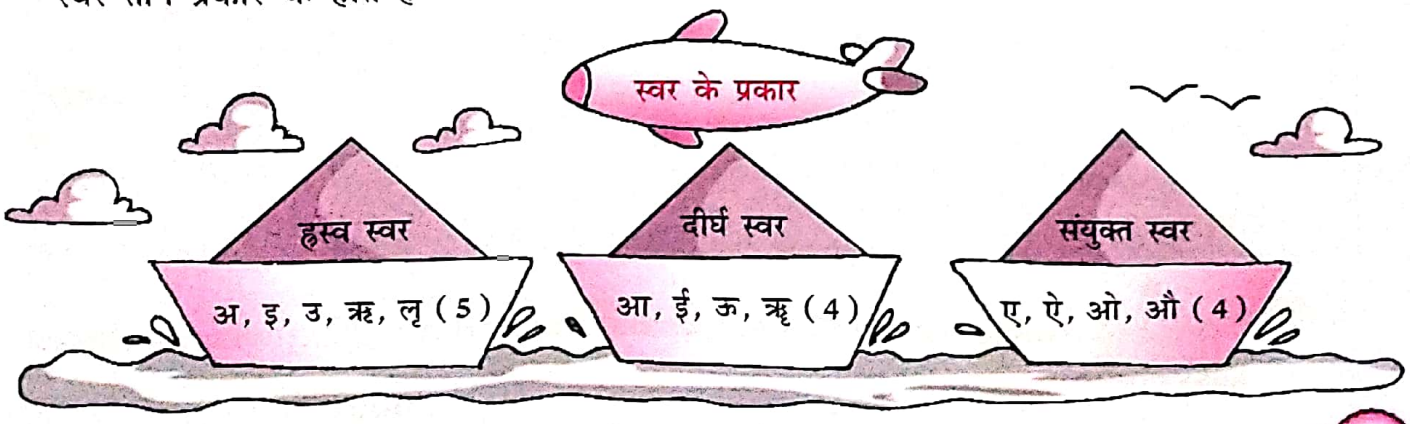

Scanned with CamScanner

ह्रस्व स्वर

इन स्वरों का उच्चारण करने में एक मात्रा का अर्थात् कम समय लगता है। ये संख्या में पाँच होते हैं– **अ, इ, उ, ऋ, ऌ**। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है।

दीर्घ स्वर

जिन स्वरों को बोलने में ह्रस्व स्वर से दुगना अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है, वे **दीर्घ स्वर** कहलाते हैं। ये संख्या में चार हैं– **आ, ई, ऊ, ॠ**।

संयुक्त स्वर

ये दो स्वरों के मेल से बनते हैं इसलिए इनका नाम संयुक्त स्वर है। इन्हें बोलने में भी दो मात्राओं का समय लगता है। इनकी संख्या भी चार है– **ए, ऐ, ओ, औ**।

अ + इ = ए अ + उ = ओ

अ + ए = ऐ अ + ओ = औ

सोचिए और बताइए–

1. वर्णमाला किसे कहते हैं?
   शब्दों के समूह को ☐ वर्णों के समूह को ☐
2. स्वर कितने प्रकार के होते हैं?
   तीन ☐ दो ☐
3. ह्रस्व स्वर कौन-कौन से होते हैं?
   अ, इ, उ, ऋ, ऌ ☐ आ, ई, ऊ, ॠ ☐

2. व्यंजन

जिन वर्णों को बोलने के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, वे **व्यंजन** कहलाते हैं। इनकी संख्या 33 होती है-

कवर्ग	–	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
चवर्ग	–	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
टवर्ग	–	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
तवर्ग	–	त्	थ्	द्	ध्	न्
पवर्ग	–	प्	फ्	ब्	भ्	म्
अन्तःस्थ	–	य्	र्	ल्	व्	
ऊष्म	–	श्	ष्	स्	ह्	

पञ्चम वर्ण

Scanned with CamScanner

व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं–

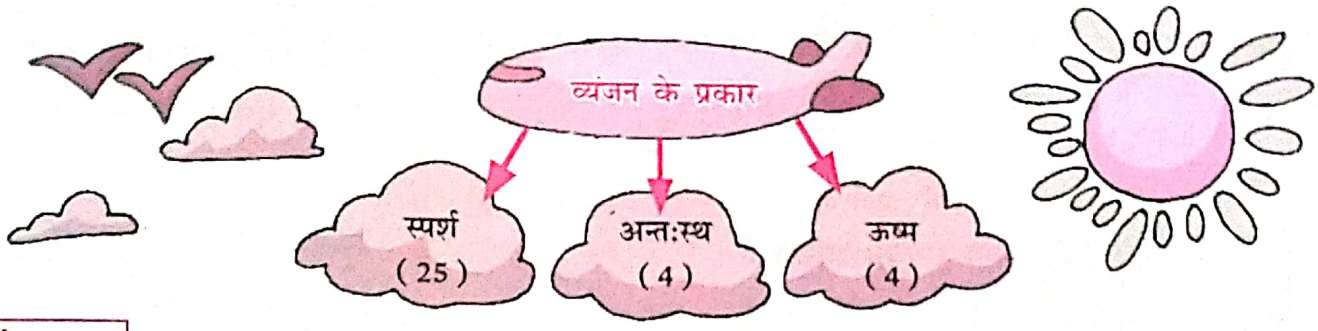

स्पर्श व्यंजन

जिन व्यंजनों को बोलने पर जीभ कण्ठ, तालु, मूर्धा आदि को स्पर्श करती है, उन्हें **स्पर्श व्यंजन** कहते हैं। इनकी संख्या 25 है और इन्हें 5 वर्गों में बाँटा गया है। प्रत्येक वर्ग के पहले अक्षर (वर्ण) से उस वर्ग का नाम रखा गया है और हर वर्ग में 5 वर्ण हैं–

कवर्ग	–	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
चवर्ग	–	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
टवर्ग	–	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
तवर्ग	–	त्	थ्	द्	ध्	न्
पवर्ग	–	प्	फ्	ब्	भ्	म्

सोचिए और बताइए–

1. व्यंजन कितने प्रकार के होते हैं?
   3 ☐ 4 ☐ 2 ☐
2. स्पर्श व्यंजन कितने होते हैं?
   5 ☐ 4 ☐ 25 ☐

अन्त:स्थ व्यंजन

इनका उच्चारण करते समय मुँह से हवा थोड़ा रुककर निकलती है।

ये संख्या में 4 होते हैं–य्, र्, ल्, व्।

ऊष्म व्यंजन

इन वर्णों का उच्चारण करते समय मुँह से गर्म हवा निकलती है, इसलिए इन्हें **ऊष्म व्यंजन** कहते हैं। इनकी संख्या 4 है– श्, ष्, स्, ह्।

हलन्त

जब व्यंजन स्वरों से रहित होते हैं तो उनके नीचे एक टेढ़ी रेखा (्) खींची जाती है, जिसे हम **हलन्त** कहते हैं; जैसे– क्, ख्, ग्, घ् आदि।

जब इनमें स्वर जुड़ जाता है तो ये पूरे हो जाते हैं; जैसे– क् + अ = क

किन्तु जब इनमें हलन्त होता है तो ये आधे अक्षर के रूप में जाने जाते हैं; जैसे–क् = क, ग् = ग, म् = म आदि।

संयुक्त व्यंजन

जब दो व्यंजनों के बीच में स्वर नहीं होता तो वे आपस में मिलकर **संयुक्त व्यंजन** बन जाते हैं।

ये मुख्यत: 5 हैं– क्ष, त्र, ज्ञ, द्य, श्र।

Scanned with CamScanner

जैसे– 1. क् + ष् + अ = क्ष

2. त् + र् + अ = त्र

3. ज् + ञ् + अ = ज्ञ

4. द् + य् + अ = द्य

5. श् + र् + अ = श्र

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य **संयुक्त व्यंजन** हैं–

क् + त् + अ = क्त	प् + र् + अ = प्र
द् + ध् + अ = द्ध	ख् + य् + अ = ख्य
द् + व् + अ = द्व	द् + र् + अ = द्र
क् + र् + अ = क्र	ध् + र् + अ = ध्र

सोचिए और बताइए–

1. किन वर्णों का उच्चारण करते समय मुँह से गर्म हवा निकलती है?
   - ऊष्म व्यंजन ☐
   - स्पर्श व्यंजन ☐
2. संयुक्त व्यंजन हैं–
   - क्ष, त्र, ज्ञ, द्य, श्र ☐
   - क, ख, ग, घ ☐

3. अयोगवाह

जिनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से नहीं किया जाता अर्थात् जो अकेले नहीं बोले जाते, वे **अयोगवाह** कहलाते हैं।

अयोगवाह

अनुस्वार (ं) | विसर्ग (:)

(क) **अनुस्वार (ं)**– यह स्वर के बाद अधिकतर 'न्' या 'म्' के स्थान पर प्रयुक्त होता है; जैसे– संवाद, संस्कृत, पुष्पं आदि।

(ख) **विसर्ग (:)**– इसका प्रयोग भी स्वर के बाद होता है तथा इसका उच्चारण 'ह्' की तरह किया जाता है; जैसे– रामः, कृष्णः, ग्रामः, हरिः आदि।

स्वरों का मात्राओं के रूप में प्रयोग

जैसा कि हमने पढ़ा– व्यंजनों का उच्चारण स्वरों के बिना नहीं किया जाता इसलिए स्वरों का प्रयोग व्यंजनों के साथ मात्राओं के रूप में किया जाता है और जब स्वर व्यंजनों के साथ जुड़ जाते हैं तो उनके हलन्त का लोप हो जाता है; जैसे–

क् + अ (अ) = क	क् + ृ (ऋ) = कृ
क् + ा (आ) = का	क् + े (ए) = के
क् + ि (इ) = कि	क् + ै (ऐ) = कै
क् + ी (ई) = की	क् + ो (ओ) = को
क् + ु (उ) = कु	क् + ौ (औ) = कौ
क् + ू (ऊ) = कू	

विशेष– 'र्' के साथ 'उ' व 'ऊ' की मात्राओं का प्रयोग इस तरह से किया जाता है–

र् + उ = रु   र् + ऊ = रू

Scanned with CamScanner

वर्ण संयोजन

वर्णों अर्थात् स्वरों व व्यंजनों को आपस में जोड़कर जब हम शब्द या पद का निर्माण करते हैं तो वह **वर्ण संयोजन** कहलाता है; जैसे–

1. स् + आ + ध् + उ: = साधुः
2. भ् + अ + व् + अ + न् + अ + म् = भवनम्
3. स् + अ + र् + इ + त् + आ = सरिता
4. ग् + इ + र् + इ: = गिरिः
5. ब् + आ + ल् + अ + क् + अ: = बालकः
6. श् + आ + ट् + इ + क् + आ: = शाटिकाः
7. ह् + इ + म् + आ + ल् + अ + य् + अ: = हिमालयः
8. भ् + आ + र् + अ + त् + अ + म् = भारतम्
9. व् + ऐ + भ् + अ + व् + अ: = वैभवः
10. म् + अ + य् + ऊ + र् + अ: = मयूरः

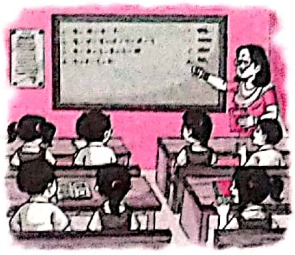

11. क् + अ + क् + ष् + आ = कक्षा
12. म् + इ + त् + र् + अ + म् = मित्रम्
13. न् + ऋ + प् + अ: = नृपः
14. ग् + र् + आ + म् + अ: = ग्रामः
15. आ + श् + ई + र् + व् + आ + द् + अ: = आशीर्वादः
16. श् + इ + क् + ष् + इ + क् + आ = शिक्षिका
17. व् + इ + द् + य् + आ + र् + थ् + ई = विद्यार्थी
18. श् + र् + ई + म् + आ + न् = श्रीमान्
19. ब् + उ + द् + ध् + इ: = बुद्धिः
20. प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ + म् = पुस्तकम्
21. व् + अ + न् + अ + म् = वनम्
22. द् + ए + व् + अ: = देवः
23. व् + आ + न् + अ + र् + अ: = वानरः
24. क् + अ + ल् + अ + म् + अ + म् = कलमम्

वर्ण विन्यास

जब हम किसी भी शब्द (पद) के वर्णों (स्वरों तथा व्यंजनों) को अलग-अलग करते हैं तो उस प्रक्रिया को **वर्ण विन्यास** (वर्ण-विच्छेद) कहते हैं; जैसे–

1. कमलानि = क् + अ + म् + अ + ल् + आ + न् + इ
2. पुष्पम् = प् + उ + ष् + प् + अ + म्
3. गीता = ग् + ई + त् + आ

Scanned with CamScanner

4. महेश्वरः = म् + अ + ह् + ए + श् + व् + अ + र् + अः

5. गजाननः = ग् + अ + ज् + आ + न् + अ + न् + अः

6. शशाकः = श् + अ + श् + अ + क् + अः

7. कृषकः = क् + ऋ + ष् + अ + क् + अः

8. भ्राता = भ् + र् + आ + त् + आ

9. विदुषी = व् + इ + द् + उ + ष् + ई

10. प्रतिज्ञा = प् + र् + अ + त् + इ + ज् + ञ् + आ

11. दर्शनम् = द् + अ + र् + श् + अ + न् + अ + म्

12. शैलः = श् + ऐ + ल् + अः

13. उद्यानम् = उ + द् + य् + आ + न् + अ + म्

14. प्रकाशः = प् + र् + अ + क् + आ + श् + अः

15. पुरुषः = प् + उ + र् + उ + ष् + अः

16. प्रार्थना = प् + र् + आ + र् + थ् + अ + न् + आ

17. शर्करा = श् + अ + र् + क् + अ + र् + आ

18. आसन्दिका = आ + स् + अ + न् + द् + इ + क् + आ

19. होरा = ह् + ओ + र् + आ

20. नक्तम् = न् + अ + क् + त् + अ + म्

21. घटः = घ् + अ + ट् + अः

22. पटलः = प् + अ + ट् + अ + ल् + अः

23. मञ्चः = म् + अ + ञ् + च् + अः

24. चक्रम् = च् + अ + क् + र् + अ + म्

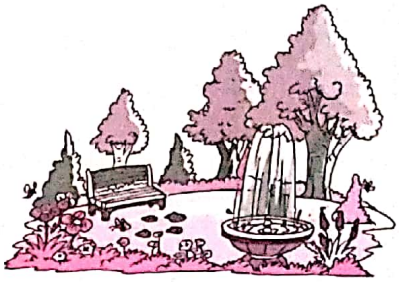

सोचिए और बताइए–

1. भ् + र् + आ + त् + आ =
   भ्राता ☐ भ्राताः ☐
2. वानरः =
   व् + आ + न् + अ + र् + अः ☐
   व् + आ + न + अ + र् ☐

स्मरणीय तथ्य

- वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।
- स्वरों की कुल संख्या 13 होती है। स्वर तीन प्रकार के होते हैं– ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर और संयुक्त स्वर।
- स्वरों को बोलने के लिए किसी अन्य वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती है।
- व्यंजनों की कुल संख्या 33 होती है।
- श्, ष्, स्, ह् ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं।
- य्, र्, ल् व् अन्तःस्थ वर्ण (व्यंजन) कहलाते हैं।
- स्पर्श व्यंजनों के 5 वर्ग होते हैं– कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग।
- जब व्यंजनों के साथ स्वर नहीं लगते, तो उनके नीचे हलन्त लगाया जाता है।
- जब हम स्वरों और व्यंजनों को जोड़कर लिखते हैं, तो वह वर्ण-संयोजन कहलाता है।
- स्वरों और व्यंजनों को अलग करने की प्रक्रिया को वर्ण-विच्छेद कहते हैं।
- विसर्ग का प्रयोग अधिकांशतः शब्द के अन्तिम स्वर के बाद होता है, लेकिन दुःखम् शब्द में विसर्ग बीच में लगता है।

Scanned with CamScanner

अभ्यासः

लिखितः

1. विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चित्वा लिखत। (विकल्पों में से उचित उत्तर चुनकर लिखिए।)

(क) ह्रस्व स्वर कितने होते हैं? .....

(i) 5 (ii) 4 (iii) 8

(ख) व्यंजनों की कुल संख्या कितनी होती है? .....

(i) 35 (ii) 30 (iii) 33

(ग) विसर्ग ..... कहलाता है।

(i) अन्तःस्थ व्यंजन (ii) स्वर (iii) अयोगवाह

(घ) 'श, ष, स, ह' ..... होते हैं।

(i) अन्तःस्थ व्यंजन (ii) ऊष्म व्यंजन (iii) स्वर

(ङ) 'ऐं' ..... स्वर है।

(i) दीर्घ (ii) ह्रस्व (iii) संयुक्त

(च) जिन्हें बोलने के लिए स्वरों की सहायता की आवश्यकता होती है, वे ..... कहलाते हैं।

(i) व्यंजन (ii) संयुक्त स्वर (iii) अयोगवाह

2. स्वरान् व्यञ्जनानि च पृथक्-पृथक् कृत्वा लिखत।

(स्वरों व व्यंजनों को अलग-अलग करके लिखिए।)

क्, अ, च्, त्, उ, न्, ह्, ओ, ऌ, ऋ, ट्, ऊ, इ, द्, फ्, ए, औ, ग्

स्वराः – .....

व्यञ्जनानि – .....

3. अधोलिखित-वर्णानां संयोजनं कृत्वा लिखत। (नीचे लिखे वर्णों का संयोजन करके लिखिए।)

(क) ग् + आ + य् + अ + त् + र् + ई = ...

(ख) प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ = ...

(ग) ग् + अ + र् + द् + अ + ष् + अः = ...

(घ) च् + आ + ल् + अ + क् + अः = ...

(ङ) म् + अ + ह् + अ + र् + ष् + इः = ...

Scanned with CamScanner

4. प्रदत्तशब्दानां वर्णविन्यासं कुरुत। (निम्नलिखित शब्दों का वर्ण विन्यास (वर्ण-विच्छेद) कीजिए।)

(क) प्रकृतिः – .....

(ख) पृथ्वी – .....

(ग) गोविन्दः – .....

(घ) दशाननः – .....

(ङ) वृक्षः – .....

(च) शैलः – .....

5. चित्राणि दृष्ट्वा उचितवर्णैः रिक्तस्थानानि पूरयत।

(चित्रों को देखकर उचित वर्णों द्वारा रिक्त स्थान भरिए।)

(क) न् + अ + य् + अ + न् + ... + म्

(ख) म् + ... + ह् + ... + ... + आ

(ग) प् + ... + ... + त् + अ + क् + ... + म्

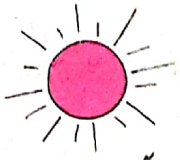

(घ) स् + ऊ + ... + य् + ...

(ङ) व् + ... + ... + अ + र् + ...

6. अन्तःस्थ वर्णान् ऊष्मवर्णान् च पृथक्-पृथक् कृत्वा लिखत।

(अन्तःस्थ और ऊष्म वर्णों को अलग-अलग करके लिखिए।)

श्, य्, ह्, व्, स्, र्, ष्, ल्

अन्तःस्थ-वर्णाः – .....

ऊष्म-वर्णाः – .....

Scanned with CamScanner

रचनात्मकं कार्यम्

- वर्णगानं स्मृत्वा कक्षायां गायन्तु। (वर्णगान याद करके कक्षा में गाएँ।)

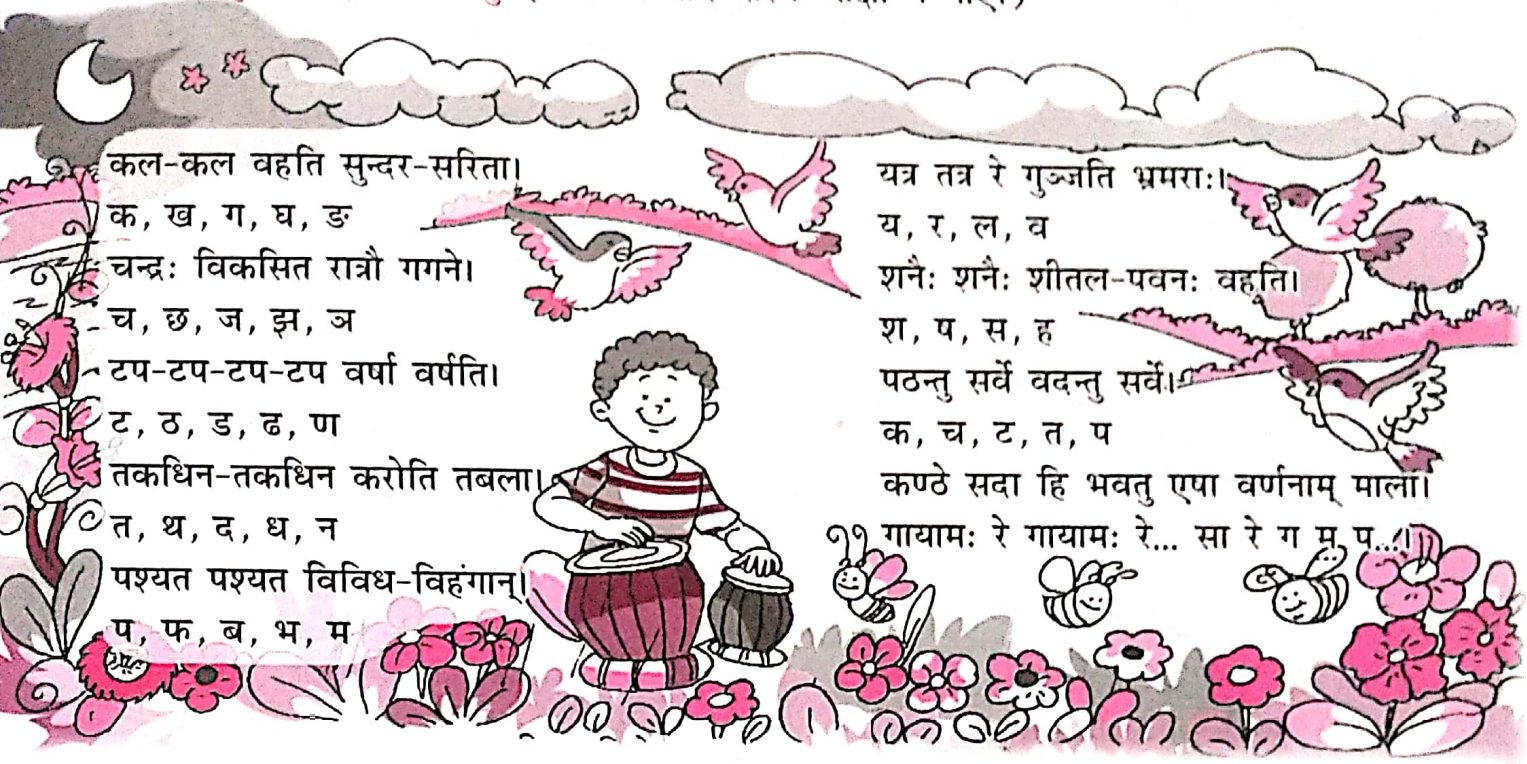

कल-कल वहति सुन्दर-सरिता।
क, ख, ग, घ, ङ
चन्द्रः विकसित रात्रौ गगने।
च, छ, ज, झ, ञ
टप-टप-टप-टप वर्षा वर्षति।
ट, ठ, ड, ढ, ण
तकधिन-तकधिन करोति तबला।
त, थ, द, ध, न
पश्यत पश्यत विविध-विहंगान्।
प, फ, ब, भ, म

यत्र तत्र रे गुञ्जति भ्रमराः।
य, र, ल, व
शनैः शनैः शीतल-पवनः वहति।
श, ष, स, ह
पठन्तु सर्वे वदन्तु सर्वे।
क, च, ट, त, प
कण्ठे सदा हि भवतु एषा वर्णनाम् माला।
गायामः रे गायामः रे... सा रे ग म प...।

- स्वपरिवारस्य सदस्यानां चित्राणि योजयत तेषां नामानि च लिखित्वा वर्ण-विच्छेदं कुरुत।
(अपने परिवार के सदस्यों की तसवीर चिपकाइए तथा उनके नाम लिखकर वर्ण-विच्छेद कीजिए।)

नाम – .....
वर्ण-विच्छेद – .....

नाम – .....
वर्ण-विच्छेद – .....

नाम – .....
वर्ण-विच्छेद – .....

नाम – .....
वर्ण-विच्छेद – .....

Scanned with CamScanner

3 लिंग-परिचयः

लिंग का अर्थ है- 'चिह्न' (पहचान)। जिन शब्दों से हमें किसी जाति विशेष का बोध होता है, उन्हें लिंग कहते हैं।

हिंदी भाषा में दो लिंग होते हैं परन्तु संस्कृत भाषा में **तीन लिंग** होते हैं-

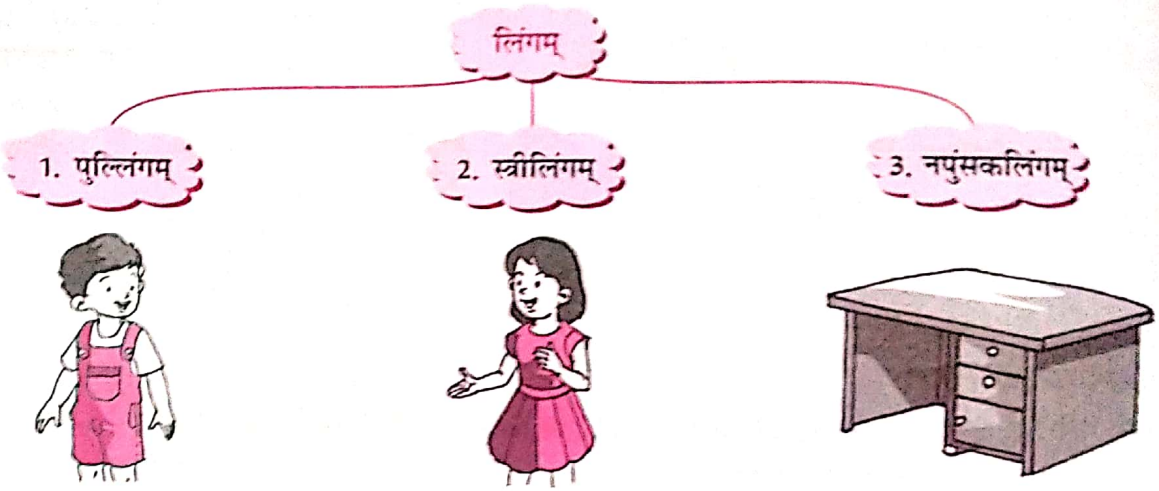

1. पुल्लिंगम्

जिन शब्दों से हमें पुरुष जाति का बोध होता है, वे **पुल्लिंग** शब्द कहलाते हैं; जैसे-

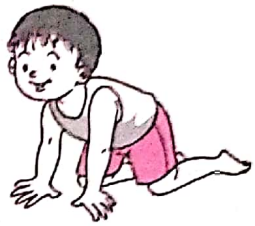
बालकः

पुरुषः

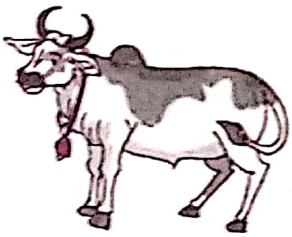
वृषभः

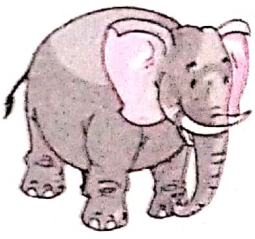
गजः

2. स्त्रीलिंगम्

जिन शब्दों से हमें स्त्री जाति का बोध होता है, वे **स्त्रीलिंग** शब्द कहलाते हैं; जैसे-

बालिका

महिला

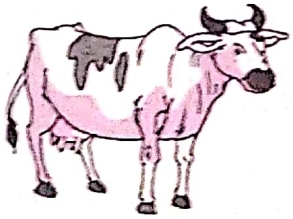
धेनुः

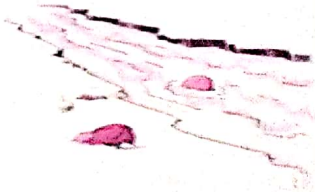
सरिता

Scanned with CamScanner

3. नपुंसकलिंगम्

जिन शब्दों से न तो पुरुष जाति का और न ही स्त्री जाति का बोध होता है, वे शब्द **नपुंसकलिंग** कहलाते हैं; जैसे–

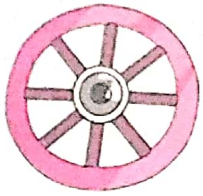
चक्रम्

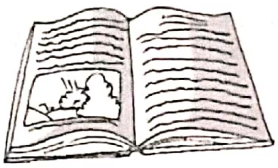
पुस्तकम्

पुष्पम्

गृहम्

सोचिए और बताइए–

1. संस्कृत भाषा में कितने लिंग होते हैं?
   दो ☐ तीन ☐
2. पुल्लिंग शब्द हमें किस जाति का बोध कराते हैं?
   पुरुष जाति ☐ स्त्री जाति ☐
3. जिन शब्दों से न तो पुरुष और न ही स्त्री जाति का बोध हो, वे शब्द किस लिंग में आते हैं?
   पुल्लिंग ☐ नपुंसकलिंग ☐
4. 'धेनुः' शब्द का लिंग है–
   पुल्लिंग ☐ स्त्रीलिंग ☐

अकारान्त-पुल्लिंग-शब्दाः

जिन पुल्लिंग शब्दों के अन्त में **'अ'** वर्ण आता है, उन्हें **अकारान्त पुल्लिंग शब्द** कहते हैं; जैसे–

वृक्षः

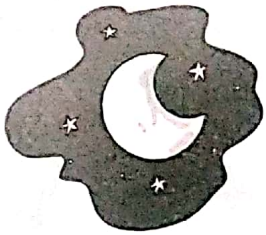
चन्द्रः

छात्रः

मयूरः

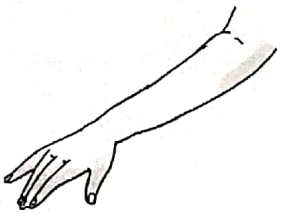
हस्तः

कुक्कुरः

पिकः

सर्पः

कृष्णः

अध्यापकः

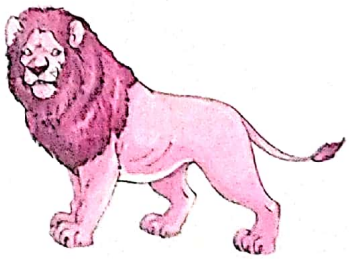
सिंहः

नृपः

Scanned with CamScanner

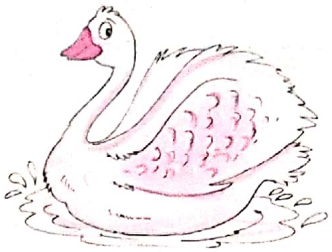

हंसः

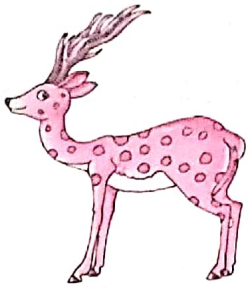

मृगः

पर्वतः

मूषकः

विशेष टिप्पणी– संस्कृत भाषा में आकारान्त पुल्लिंग शब्द भी होते है किन्तु उनका प्रयोग उच्च कक्षाओं में ही होता है। अतः उनकी चर्चा यहाँ नहीं की जा रही है।

इकारान्त-पुल्लिंग-शब्दाः

जिन पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'इ' वर्ण आता है, उन्हें **इकारान्त पुल्लिंग शब्द** कहते हैं; जैसे–

हरिः

अग्निः

मुनिः

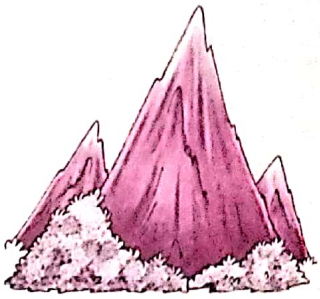

गिरिः

भूपतिः

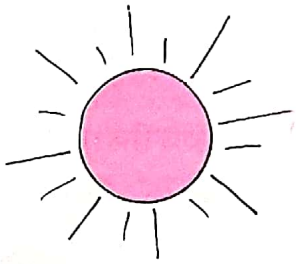

रविः

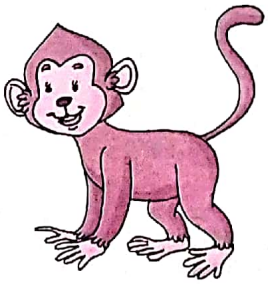

कपिः

कविः

उकारान्त-पुल्लिंग-शब्दाः

जिन पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'उ' वर्ण आता है, उन्हें **उकारान्त पुल्लिंग शब्द** कहते हैं; जैसे–

शिशुः

विष्णुः

इन्दुः

साधुः

Scanned with CamScanner

गुरुः

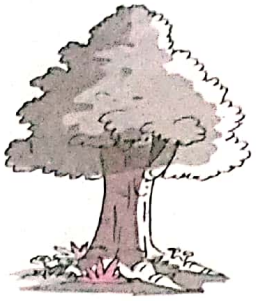

तरुः

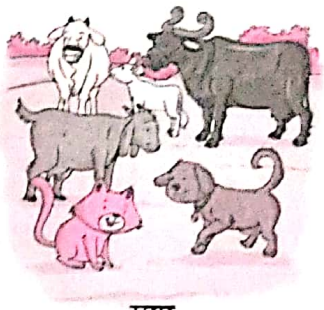

पशुः

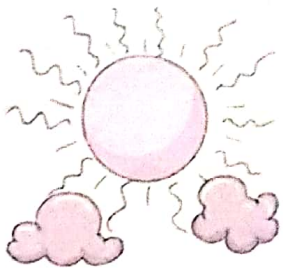

भानुः

कुछ अन्य पुल्लिंग शब्द–

अकारान्त पुल्लिंग → अजः = बकरा, मकरः = मगरमच्छ, विडालः = बिल्ला, अश्वः = घोड़ा, मेघः = बादल, जनकः = पिता, रावणः = रावण, प्राज्ञः = विद्वान्, पुत्रः = बेटा

इकारान्त पुल्लिंग → ओषधिः = दवाई, नृपतिः = राजा, सेनापतिः = सेनापति, राष्ट्रपतिः = राष्ट्रपति, निधिः = खजाना, अतिथिः = मेहमान

उकारान्त पुल्लिंग → वायुः = हवा, शत्रुः = दुश्मन, श्रद्धालुः = श्रद्धा रखने वाला, रिपुः = दुश्मन

सोचिए और बताइए–

1. जिन पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'अ' आता है, उन्हें कौन-सा शब्द कहते हैं?
   आकारान्त पुल्लिंग शब्द ☐ अकारान्त पुल्लिंग शब्द ☐
2. इकारान्त पुल्लिंग शब्द किसे कहते हैं?
   जिन पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'इ' हो ☐ जिन पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'ई' हो ☐

आकारान्त-स्त्रीलिंग-शब्दाः

जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में **'आ'** वर्ण आता है, वे **आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द** कहलाते हैं; जैसे–

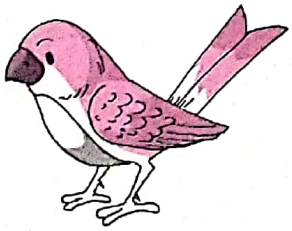

चटका

कन्या

रमा

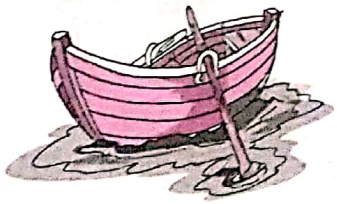

नौका

महिला

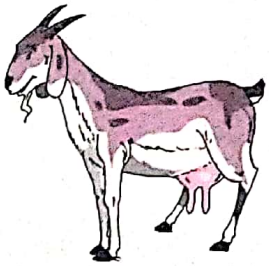

अजा

मूषिका

अध्यापिका

Scanned with CamScanner

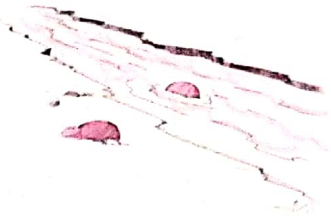

सरिता

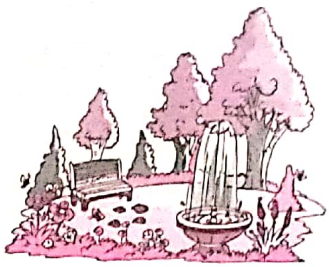

वाटिका

छात्रा

लता

बालिका

द्विचक्रिका

माला

गायिका

इकारान्त-स्त्रीलिंग-शब्दाः

जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में **'इ'** वर्ण आता है, वे **इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द** कहलाते हैं; जैसे–

बुद्धिः / मतिः = बुद्धि	शान्तिः = शान्ति	रात्रिः = रात
धूलिः = मिट्टी	स्मृतिः = याददाश्त	शुद्धिः = पवित्रता

ईकारान्त-स्त्रीलिंग-शब्दाः

जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में **'ई'** वर्ण आता है, वे **ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द** कहलाते हैं; जैसे–

पुत्री

सखी

दासी

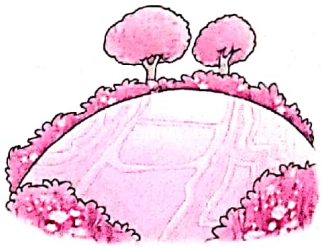

पृथिवी

नदी

जननी

सरस्वती

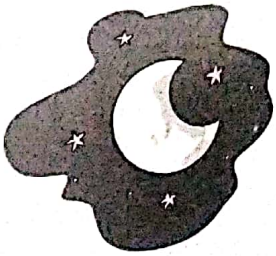

रजनी

विशेष टिप्पणी– संस्कृत भाषा में स्त्रीलिंग में 'अकारान्त' शब्द नहीं होते हैं।

Scanned with CamScanner

कुछ अन्य स्त्रीलिंग शब्द–

आकारान्त स्त्रीलिंग →	वृद्धा	= बूढ़ी औरत	कथा	= कहानी	सुधा	= अमृत
	क्रीडा	= खेल	घटिका	= घड़ी	निशा	= रात
	शाखा	= टहनी	पाकशाला	= रसोईघर	वसुधा	= पृथ्वी
	नासिका	= नाक	शिला	= पत्थर	सुता	= पुत्री
इकारान्त स्त्रीलिंग →	भक्तिः	= भक्ति	गतिः	= चाल	शक्तिः	= शक्ति
	रुचिः	= रुचि	रीतिः	= रीति	मतिः	= बुद्धि
ईकारान्त स्त्रीलिंग →	नारी	= स्त्री	रजनी	= रात	भगिनी	= बहन
	महिषी	= भैंस	राज्ञी	= रानी	मृगी	= हिरणी
	धीः	= बुद्धि	लेखनी	= कलम	मही	= पृथ्वी

विशेष टिप्पणी– पुल्लिंग से स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए प्रायः 'आ' और 'ई' वर्ण का प्रयोग शब्द के अन्त में किया जाता है; जैसे– मूषकः – मूषिका, मातामहः – मातामही।

अकारान्त-नपुंसकलिंग-शब्दाः

जिन नपुंसकलिंग शब्दों के अन्त में **'अ'** वर्ण आता है, वे **अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द** कहलाते हैं; जैसे–

पुष्पम्

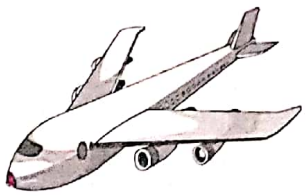

वायुयानम्

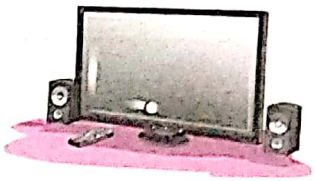

दूरदर्शनम्

पत्रम्

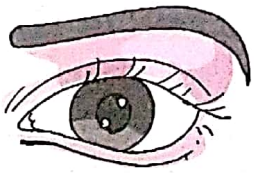

नेत्रम्

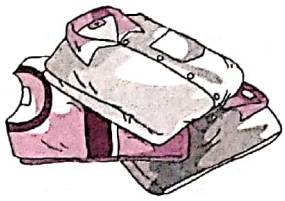

वस्त्रम्

भोजनम्

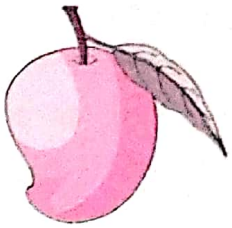

आम्रम्

उद्यानम्

गृहम्

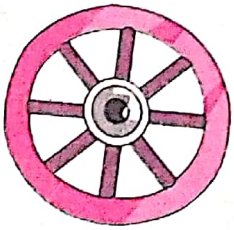

चक्रम्

वनम्

Scanned with CamScanner

कमलम्

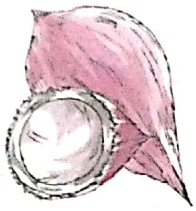

नारिकेलम्

फलम्

भवनम्

पुस्तकम्

शाकम्

छत्रम्

भूषणम्

विशेष टिप्पणी– नपुंसकलिंग शब्दों के अन्त में 'म्' लिखा जाता है।

कुछ अन्य नपुंसकलिंग शब्द

मुखम्	=	मुख	व्यजनम्	=	पंखा	यन्त्रम्	=	मशीन
पात्रम्	=	बरतन	ज्ञानम्	=	ज्ञान	सेवम्	=	सेब
कार्यम्	=	कार्य	क्षेत्रम्	=	खेत/मैदान	पत्रम्	=	पत्ता/चिट्ठी
बसयानम्	=	बस	धनम्	=	धन	सङ्गणकम्	=	कम्प्यूटर
कन्दुकम्	=	गेंद	जलम्	=	जल	दुग्धम्	=	दूध

स्मरणीय तथ्य

- संस्कृत भाषा में तीन लिंग होते हैं–पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग।
- जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है वे पुल्लिंग और जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है वे स्त्रीलिंग शब्द कहलाते हैं।
- जिन शब्दों से न तो पुरुष और न ही स्त्री जाति का बोध हो वे नपुंसकलिंग शब्द कहलाते हैं।
- शब्द के अन्त में जो वर्ण (स्वर/व्यंजन) आता है उसी के नाम से उस शब्द को लिखा जाता है; जैसे– 'राम' के अन्त में 'अ' है तो अकारान्त, ऐसे ही 'बालिका' आकारान्त, 'साधु' उकारान्त हुआ।
- संस्कृत में स्त्रीलिंग शब्दों में 'अकारान्त शब्द' नहीं होते हैं।

अभ्यासः

लिखितः

1. विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चित्वा लिखत। (विकल्पों में से उचित उत्तर चुनकर लिखिए।)

(क) रामः – .....

(*i*) पुल्लिंगम् (*ii*) स्त्रीलिंगम् (*iii*) नपुंसकलिंगम्

Scanned with CamScanner

(ख) आम्रम् – .....

(i) पुल्लिंगम् (ii) स्त्रीलिंगम् (iii) नपुंसकलिंगम्

(ग) वधू – .....

(i) पुल्लिंगम् (ii) स्त्रीलिंगम् (iii) नपुंसकलिंगम्

(घ) शत्रुः – .....

(i) पुल्लिंगम् (ii) स्त्रीलिंगम् (iii) नपुंसकलिंगम्

2. कोष्ठकात् उचितम् उत्तरं चित्वा लिखत। (कोष्ठक में से उचित उत्तर चुनकर लिखिए।)

(क) गजः = ... (अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त)

(ख) इन्दुः = ... (अकारान्त, उकारान्त, ईकारान्त)

(ग) सखी = ... (ईकारान्त, उकारान्त, आकारान्त)

(घ) वस्त्रम् = ... (आकारान्त, ईकारान्त, अकारान्त)

(ङ) कविः = ... (इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त)

3. उचित-मेलनं कुरुत। (उचित मिलान कीजिए।)

नरः	आकारान्त-स्त्रीलिंग
तरुः	अकारान्त-पुल्लिंग
सखी	उकारान्त-पुल्लिंग
गिरिः	अकारान्त-नपुंसकलिंग
फलम्	इकारान्त-स्त्रीलिंग
चटका	इकारान्त-पुल्लिंग
दुग्धम्	ईकारान्त-स्त्रीलिंग
मतिः	अकारान्त-नपुंसकलिंग

4. निम्नलिखितशब्दान् लिंगानुसारं पृथक्-पृथक् कुरुत।

(निम्नलिखित शब्दों को लिंग के अनुसार अलग-अलग कीजिए।)

पुल्लिंगम् – .....

.....

स्त्रीलिंगम् – .....

.....

नपुंसकलिंगम् – .....

.....

वृक्षः, नक्षत्रम्, अध्यापिका, जलम्, छात्रा, कमलम्, गुरुः, नायिका, पितामहः, जननी, अन्नम्, क्रीडनकम्, कपिः, सारिका, हस्तः

Scanned with CamScanner

5. निम्न-शब्दान् संस्कृते लिखत। (निम्नलिखित शब्दों को संस्कृत में लिखिए।)

मोर	=	हिरन	=	हाथी	= .....
आग	=	हाथ	=	राजा	= .....
साँप	=	कान	=	आम	= .....

6. पुल्लिंग से स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए 'आ' और 'ई' वर्णों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

अश्वः = अश्वा मूषकः = मूषिका गायकः = गायिका नरः = नारी विद्वान् = विदुषी

निम्नलिखित-शब्दान् स्त्रीलिङ्गे परिवर्तयत। (निम्नलिखित शब्दों को स्त्रीलिंग में बदलिए।)

बालः	=	कुमारः	=	अनुजः	= .....
तरुणः	=	अध्यापकः	=	मानवः	= .....
सुतः	=	साधुः	=	प्रियः	= .....
बुद्धिमान्	=	चटकः	=	छात्रः	= .....

रचनात्मकं कार्यम्

- अधोदत्त-प्रहेलिकायाः पुल्लिंग-स्त्रीलिंग-नपुंसकलिंग-शब्दान् चिनुत।

(नीचे दी गई प्रहेलिका से पुल्लिंग-स्त्रीलिंग-नपुंसकलिंग शब्दों को चुनिए।)

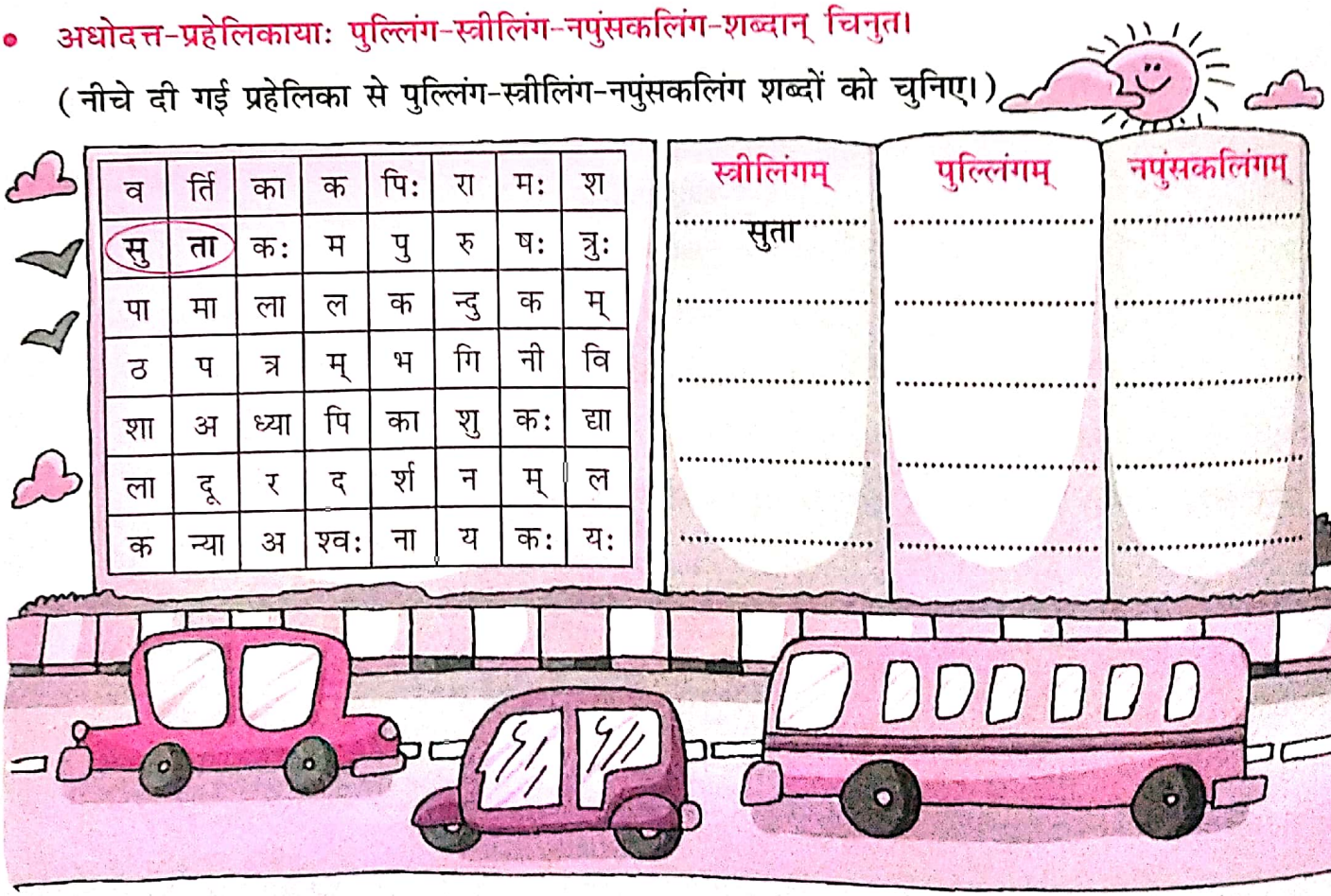

व	र्ति	का	क	पिः	रा	मः	श
सु	ता	कः	म	पु	रु	षः	त्रुः
पा	मा	ला	ल	क	न्दु	क	म्
ठ	प	त्र	म्	भ	गि	नी	वि
शा	अ	ध्या	पि	का	शु	कः	द्या
ला	दू	र	द	र्श	न	म्	ल
क	न्या	अ	श्वः	ना	य	कः	यः

स्त्रीलिंगम्	पुल्लिंगम्	नपुंसकलिंगम्
सुता		

Scanned with CamScanner